P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

'कामायनी' में निहित पर्यावरणीय संदेश

रामरतन सैन
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय,
अजमेर मदस विश्वविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

सारांश

'कामायनी' (1935) हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल की छायावादी काव्यधारा की एक प्रमुख काव्यकृति है। इसके रचयिता जयशंकर प्रसाद है। 'कामायनी' में जीव–जगत एवं पर्यावरण–संरक्षण संबंधी संदेश निहित है। देवसृष्टि के विनाश का कारण अतिविलासी एवं भोगवादी प्रवृत्ति रही। जल–प्रलय उसी का परिणाम है। प्राकृतिक शक्तियों पर स्वैच्छिक नियंत्रण–प्राकृतिक प्रकोप के रूप में सामने आता है। यज्ञ पर्यावरण प्रदूषण से मुक्ति दिलाकर शुद्ध प्राणवायु सृजित करते हैं। पशु–पक्षी संरक्षणीय है। पर्ण–कुटीर और श्रद्धा का सूत कातना स्वावलंबन व स्वदेशी का संदेश है। 'चिंता' जीवन में ज्वालामुखी के समान भयानक है।

मुख्य शब्द : भूमिका, छायावादी काव्य, 'कामायनी' का पर्यावरणीय संदेश, मूल्यांकन।

प्रस्तावना

'कामायनी' में वैसे तो विश्वहितवाद, मानवतावाद, समन्वयवाद, समरसतावाद, बुद्धिवाद, दुखवाद, आनंदवाद आदि का संदेश निहित है। देवसृष्टि के विनाश का कारण अति विलासिता और भोगवादी प्रवृत्ति रही और उसी का परिणाम जल–प्रलय के रूप में सामने आया। प्राकृतिक शक्तियों पर स्वैच्छिक नियंत्रण प्राकृतिक प्रकोप के रूप में सामने आता है। वासना चारित्रिक विनाश का कारण है–

विकल वासना के प्रतिनिधि वे सब मुरझाये चले गए,
आह! जले अपनी ज्वाला से फिर वे जल में गले, गए।[1]

यज्ञों में प्राचीन काल में पशु–बलि का प्रचलन था। पशुबलि से वन्य प्राणियों के जीवन पर संकट आ जाता था। शिकार पर भी प्रतिबंध नहीं था –

देव–यजन के पशुयज्ञों की वह पूर्णाहुति की ज्वाला,
जलनिधि में बन जलती कैसी आज लहरियों की माला।[2]

यज्ञाग्नि से निकला सुगंधित धूम प्रदूषित वायु को शुद्ध करता है। 'कामायनी' के 'आशा' सर्ग में मनु को यज्ञ करते हुए चित्रित किया है। यज्ञ का महत्त्व बताते हुए प्रसाद लिखते हैं–

पाकयज्ञ करना निश्चित कर लगे शालियों को चुनने,
उधर वह्नि–ज्वाला भी अपना लगी धूम–पट थी बुनने।
शुष्क डालियों से वृक्षों की अग्नि–अर्चियाँ हुई समिद्ध।
आहुति के नव धूमगंध से नभ–कानन हो गया समृद्ध।[3]

मनु यज्ञ के प्रणेता एवं प्रथम होता थे। यज्ञ पुरोहित के रूप में मनु का आहवान यज्ञ (हवन) के महत्त्व को उजागर करता है–

यजन करोगे क्या तुम ? फिर यह किसको खोज रहे हो ?
अरे पुरोहित की आशा में कितने कष्ट सहे हो।
इस जगती के प्रतिनिधि जिनसे प्रगट निशीथ सवेरा–
'मित्र वरुण' जिनकी छाया है यह आलोक–अंधेरा।
वे ही पथ–दर्शक हों सब विधि पूरी होगी मेरी
चलो आज फिर से वेदी पर हो ज्वाला की फेरी।[4]

यज्ञ, पशु–पालन,जल एवं पर्यावरण संरक्षण के साथ पशु–पक्षियों के लिए अन्न, जल आदि का दान ऐसे परंपरागत सद्कर्म हैं जो प्रकृति के विनाश को रोककर पर्यावरण–संरक्षण के भारतीय दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं–

परंपरागत कर्मों की वे कितनी सुंदर लड़ियाँ,
जीवन–साधन की उलझी हैं जिसमें सुख की घड़ियाँ ।
जिनमें है प्रेरणामयी–सी संचित कितनी कृतियाँ,
पुलकभरी सुख देने वाली बन कर मादक स्मृतियाँ।।[5]

'कामायनी' के 'ईर्ष्या' सर्ग में पशुओं को दुग्ध–धाम, अवध्य एवं संसार–सागर से पार उतारने वाले सेतु बताया गया है, जो निश्चित ही प्रसाद जी की सजग पर्यावरणीय चेतना का ज्वलंत एवं प्रासंगिक उदाहरण है।

प्राचीन काल में बनी पर्णकुटियाँ पर्यावरण के साथ जीने का संदेश देती हैं। वर्तमान औद्योगिक युग में वन–विनाश के साथ बनी बहुमंजिला अट्टालिकाएँ पर्यावरण के बिल्कुल अनुकूल नहीं हैं। श्रद्धा के द्वारा बनाया हुआ पर्ण– कुटीर कितना सुन्दर है! मनु को दिखलाती हुई वह कहती है –

मैंने तो एक बनाया है
चल कर देखो मेरा कुटीर,
यों कह कर श्रद्धा हाथ पकड़
मनु को ले चली वहाँ अधीर।
उस गुफा समीप पुआलों की
छाजन छोटी सी शांति–पुंज,
कोमल लतिकाओं की डालें
मिल सघन बनाती जहाँ–कुँज।
थे वातायन भी कटे हुए,
प्राचीन पर्णमय रचित शुभ्र,
आवें क्षणभर तो चले जाएँ–रुक जाएँ
कहीं न समीर, अभ्र।[6]

श्रद्धा का गृह–कार्य से अवकाश के समय तकली से सूत कातना जहाँ एक ओर स्वदेशी वस्तु के उपयोग का पावन संदेश है तो दूसरी ओर स्व–रोजगार एवं कर्म–सौन्दर्य का भी। प्राचीन काल में वस्त्र उद्योग कृषि पर निर्भर था क्योंकि उसके लिए कच्चा माल कपास के पौधे से प्राप्त रूई था। श्रद्धा मनु से कहती है–

तुम दूर चले जाते हो
जब–तब लेकर तकली, यहाँ बैठ,
मैं उसे फिराती रहती हूँ
अपनी निर्जनता बीच पैठ।
मैं बैठी गाती हूँ
तकली के प्रतिवर्तन में स्वर विभोर–
'चल री तकली धीरे–धीरे
प्रिय गए खेलने को अहेर'।[7]

पशु रक्षणीय एवं पालनीय है। शिकार के रूप में उनका वध केवल क्रूरता का प्रदर्शन एवं अपने तुच्छ शौक की पूर्ति मात्र है। जब श्रद्धा सूत कातती है तो मनु उससे पूछते हैं –

यह क्यों, क्या मिलते नहीं
तुम्हें शावक के सुन्दर मृदुल चर्म ?
तुम बीज बीनती क्यों ?
मेरा मृगया का शिथिल हुआ न कर्म।
तिस पर यह पीलापन कैसा–यह
क्यों बुनने का श्रम सखेद?
यह किसके लिए, बताओ तो क्या
इसमें है छिप रहा भेद?[8]

तब श्रद्धा पशुओं को अवध्य बताती है और शस्त्रास्त्रों को आत्मरक्षा के स्रोत मात्र। इस प्रकार 'कामायनी' से वन्य जीव संरक्षण का पर्यावरणीय संदेश प्रसारित होता है।

आसुरी शक्तियों के प्रभाव से सारस्वत नगर का उजड़ जाना, वस्तुतः व्यक्ति की दयनीय दशा व चारित्रिक विकृति का प्रतीक है। सरस्वती नदी और नक्षत्र मानो दुख में विकल है–

पथ–पथ में भटक अटकते वे
आए इस ऊजड़ नगर–प्रांत
बहती सरस्वती वेग भरी
निस्तब्ध हो रही निशा–श्याम
नक्षत्र निरखते निर्निमेष सुधा को
वह गति विकल वाम
कृतघ्नी का वह जनाकीर्ण
उपकूल आज कितना सूना।[9]

मनु के द्वारा उद्भूत एवं प्रसारित मानव प्रजा सृष्टि अपनी द्वैतता के कारण वर्ण एवं वर्गभेद उत्पन्न कर वर्गवाद, जातिवाद एवं भाषावाद आदि सामाजिक समस्याओं को जन्म देती है। ये ही प्राकृतिक समस्याओं की वृद्धि में सहायक हैं। बढ़ता ध्वनि प्रदूषण कोलाहल एवं कलह के रूप में जातीय एकता को नष्ट करता है –

यह अभिनव मानव प्रजा सृष्टि
द्वयता में लगी निरंतर ही वर्णों की करती रहे वृष्टि
अनजान समस्याएँ गढ़ती–रचती हो अपनी ही विनष्टि
कोलाहल कलह अनंत चले, एकता नष्ट हो बढ़े भेद
अभिलषित वस्तु तो दूर रहे, हाँ मिलें अनिच्छित दुख
खेद।[10]

'चिंता' रूपी ज्वालामुखी वर्तमान में एक प्रमुख वैयक्तिक समस्या के रूप में उभरी है। आज राजमहल/संसद से आम आदमी की झोंपड़ी तक आबालवृद्ध 'टेंशन' (तनाव) से पीड़ित हैं। प्रसाद लिखते हैं –

ओ चिंता की पहली रेखा,
अरी विश्व–वन की व्याली
ज्वालामुखी विस्फोट के भीषण
प्रथम कंप–सी मतवाली।
हे अभाव की चपल बालिके,
री ललाट की खललेखा!
हरी–भरी–सी दौड़धूप
ओ जल माया की चल–रेखा![11]

यह अनेक शारीरिक व्याधियों और मानसिक आँधियों से व्यक्ति को ग्रसित कर निष्क्रिय कर देती है। प्रसाद जी मानते हैं कि चिंता व्याधि की सूत्रधारिणी है –

अरी व्याधि की सूत्र–धारिणी–
अरी आधि, मधुमय अभिशाप!
हृदय गगन में धूमकेतु–सी,
पुण्य–सृष्टि में सुंदर पाप।[12]

जीवन में संयमित दिनचर्या और सद्व्यवहार प्रकृति को बचाने में सहायक है। अभी भी समय है कि मानव विनाश के विष–बीजों का वपन न करें। वायु, जल, मृदा, रसायन आदि का प्रदूषित रूप मानव–जाति के विनाश को खुला निमंत्रण है। मानव चाहे तो भूल सुधार सकता है –

इस देव–द्वन्द्व का वह प्रतीक–
मानव! कर ले सब भूल ठीक
यह विष जो फैला महा–विषम
निज कर्मोन्नति से करते सम,

सब मुक्त बने, काटेंगे भ्रम,
उनका रहस्य हो शुभ–संयम।[13]

भूमि–कंपन (भूकंप) एक प्रमुख प्राकृतिक आपदा है जिससे कुछ क्षणों में ही व्यापक जान और माल की हानि हो जाती है। ऐसा पृथ्वी की विभिन्न सतहों में टकराहट और चट्टानों के टूटने से होता है। 'कामायनी' के 'दर्शन' सर्ग में प्रसाद जी लिखते हैं –

विद्युत कटाक्ष चल गया जिधर,
कंपित संसृति बन रही उधर,
चेतन परमाणु अनंत बिखर,
बनते विलीन होते क्षण भर,
यह विश्व झूलता महादोल,
परिवर्तन का पट रहा खोल।[14]

मानव नव–निर्माण और भौतिक विकास में अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर रहा है। वह आपसी कटुता का वातावरण बना रहा है। अपने क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति में व्यक्ति प्राकृतिक–विनाश से भी नहीं चूकता है। विभिन्न प्रकार के परमाणु हथियारों से प्राणी भयभीत रहता है। अतः ऐसी गलाकाट प्रतिस्पर्धा से बचकर मनुष्य को सतत् पोषणीय विकास करना अभीष्ट होगा। 'इड़ा' सर्ग में प्रसाद जी लिखते हैं –

झंझा–प्रवाह सा निकला
यह जीवन विक्षुब्ध महासमीर
ले साथ विकल परमाणु–पुंज नभ,
अनिल, अनल, क्षिति और नीर
भयभीत सभी को भय देता
भय की उपासना में विलीन
प्राणी कटुता को बाँट रहा
जगती को करता अधिक दीन
निर्माण और प्रतिपद–विनाश में
दिखलाता अपनी क्षमता
संघर्ष कर रहा–सा सबसे,
सबसे विराग सब पर ममता।[15]

अध्ययन का उद्देश्य

छायावादी काव्य के अन्तर्गत जयशंकर प्रसाद कृत 'कामायनी' में निहित पर्यावरणीय संदेश की खोज एवं विवेचन मेरे शोध का एक अध्ययन विषय और मुख्य उद्देश्य है।

निष्कर्ष

कामायनी' के प्रकृति–वर्णन के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि कवि प्रसाद ने प्रकृति का विभिन्न रूपों में प्रयोग कर प्राकृतिक–सुषमा के वर्णन में चार चाँद लगा दिए हैं। पूर्व के कवियों में ऐसी अभिनव सौन्दर्य दृष्टि नहीं थी। जैसा कि प्रख्यात आलोचक नामवर सिंह का कहना है – ''इस प्रकार छायावादी कवियों ने चुने हुए तथ्यों को उपलक्ष्य बना करके अपने जीवन के अनेक सत्यों की अभिव्यंजना की। इस प्रक्रिया में छायावाद का ध्यान वस्तु के बाह्य आकार की अपेक्षा या तो उसमें निहित भाव की ओर गया या उसकी सूक्ष्म छाया की ओर। प्रकृति–चित्रण में पहले के कवि जहाँ पेड़–पौधों का नाम गिनाकर अथवा प्राकृतिक दृश्यों के स्थूल आकार का वर्णन करके संतुष्ट हो लेते थे, वहाँ छायावादी कवि ने प्रकृति के अन्तः स्पंदन का सूक्ष्म अंकन किया।''[16] 'कामायनी' में पर्यावरणीय समस्याओं की ओर एक तर्जनी संकेत तो है ही पर्यावरण–संरक्षण का अनुपम संदेश भी है। छायावादी काव्य में यत्र–तत्र प्रायः सर्वत्र पर्यावरण/प्रकृति का सुंदर चित्रण मिलता है।

अंत टिप्पणी

1. *कामायनी – ले. प्रसाद, पृ. 16 हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण 2000*
2. *वही, पृ. 16*
3. *वही, पृ. 22*
4. *वही, पृ. 52*
5. *वही, पृ. 53*
6. *वही, पृ. 64*
7. *वही, पृ. 65*
8. *वही, पृ. 63*
9. *वही, पृ. 69*
10. *वही, पृ. 71*
11. *वही, पृ. 03*
12. *वही, पृ. 14*
13. *वही, पृ. 121*
14. *वही, पृ. 122*
15. *वही, पृ. 67*
16. *आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ – ले. नामवर सिंह, पृ. 19 लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण, 2005*